भारत के पोषण एजेंडे के केंद्र में आहार

लेखक - एसवी सुब्रमण्यन (प्रोफेसर, जनसंख्या स्वास्थ्य और भूगोल, हार्वर्ड)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (स्वास्थ्य) से संबंधित है।

द हिन्दू

21 दिसम्बर, 2020

बच्चों के अल्पपोषण के बोझ को कम करने के लिए एक नीतिगत लक्ष्य की आवश्यकता है, जिसमें गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों तक सस्ती पहुंच प्रदान करना सबसे ऊपर होना चाहिए।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS, 2019-20) के 5वें राउंड में दर्शाए गये बच्चों में अल्पपोषण की समस्या किसी भी रूप में उत्साहजनक नहीं है। इस सर्वेक्षण का अधिकांश भाग, बच्चों के मानवमिति पर केन्द्रित है अर्थात, बच्चों को उनकी मानकीकृत ऊँचाई और आयु, वजन और आयु या वजन और ऊँचाई में पायी गयी कमियों के अनुसार स्टंटेड, अंडरवेट या वेस्टेड के रूप में परिभाषित किया गया है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के बाल विकास मानकों से नीचे है। हालांकि, बच्चों के बीच भोजन या आहार सेवन की पर्याप्तता और अपर्याप्तता को देखकर भी कुपोषण को मापा जा सकता है।

आहार संबंधी कुपोषण

उन सभी 22 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में, जिनके लिए NFHS-5 ने अपना सर्वेक्षण जारी किया है। बच्चों का प्रतिशत (6-23 महीने की आयु) जो न्यूनतम आहार पर्याप्तता को पूरा नहीं करते हैं - जैसा कि शिशु और युवा बाल आहार (IYCF) के तहत परिभाषित किया गया है - 83.9% है; NFHS-4 (2015-16) की तुलना में यह आंकड़ा 2 प्रतिशत कम ही है। इस प्रकार, 10 में से 8 बच्चे आहार की कमी का सामना कर रहे हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं होगी अगर यह स्थिति और खराब हो जाती है, क्योंकि वर्त्तमान समय COVID-19 महामारी के प्रसार और लॉकडाउन के दौर से गुजर रहा है।

यद्यपि 22 राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में से 17 राज्यों में गिरावट देखी गयी है और 5 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में आहार पर्याप्तता मानदंडों को पूरा नहीं करने वाले बच्चों का प्रतिशत कम हुआ है। सबसे बड़ी प्रतिशत गिरावट (11.1%) गोवा में देखी गयी है और जम्मू और कश्मीर ने पिछले तीन वर्षों में आहार पर्याप्तता नहीं मिलने के प्रतिशत में सबसे अधिक वृद्धि (76.5% से 86.4%) देखी है।

NFHS-4 पर आधारित विश्लेषण से पता चलता है कि प्रोटीन युक्त भोजन के साथ-साथ फल और सब्जियों का सेवन भी काफी कम था। चूंकि विभिन्न खाद्य समूहों की खपत पर अलग-अलग बाल-स्तर के आंकड़े जारी नहीं किए गए हैं, इसलिए हमें यह देखने के लिए इंतजार करना होगा कि बच्चों के आहार की कमी का सामना करने वाले विशिष्ट पहलू क्या हैं।

एनीमिया की व्यापकता

यह सर्वेक्षण उन बच्चों का प्रतिशत प्रदान करता है जो एनीमिक - (लोहे की कमी का एक संकेत) हैं। 22 राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में, बच्चों में एनीमिया का प्रसार लगभग 8 प्रतिशत बढ़कर 51.8% से 60.2% हो गया। 22 राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में से 18 में बच्चों में एनीमिया की व्यापकता बढ़ी है। अधिकांश राज्यों में, तीन में से दो बच्चों में लोहे की कमी की पूरी संभावना है। वयस्कों के लिए राज्यवार रुझान मिश्रित हैं, हालांकि यह स्पष्ट है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं में एनीमिया का खतरा सबसे अधिक है।

समग्र पोषण (POSHAN) अभियान के लिए प्रधानमंत्री की योजना और विशेष रूप से, एनीमिया मुक्त भारत, रणनीति 2018 में आयरन और फोलिक एसिड (IFA) पूरकता, एनीमिया से संबंधित देखभाल और उपचार, गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और बच्चों सहित पूरे समूह में सुधार के प्रयासों के साथ शुरू किया गया था।

आहार संबंधी उपाय

बच्चों में भोजन या आहार अल्पपोषण का बोझ चिंताजनक है और यह गंभीर चिंताओं को उजागर करता है। यही उचित समय है जब कुपोषण की समस्या में आहार-संबंधी उपायों पर स्पष्ट ध्यान दिया जाए।

अल्पपोषण की समस्या का सामना करने वाले बच्चों के आधार पर एक संयुक्त टाइपोलॉजी का उपयोग करके पोषण संबंधी स्थिति का वर्गीकरण महत्वपूर्ण साबित होगा। हाल ही में NFHS-4 आधारित इस टाइपोलॉजी का उपयोग करते हुए एक अध्ययन में पाया गया कि 36. 3% बच्चे जो आहार संबंधी विफलता का अनुभव कर रहे हैं उनमें एंथ्रोपोमेट्रिक समस्या नहीं दिखी।

आहार संबंधी कारक स्पष्ट रूप से भारतीय बच्चों के पोषण की स्थिति में स्थिरता के प्रमुख निर्धारक हो सकते हैं। इस प्रकार बाल कुपोषण का सही बोझ एंथ्रोपोमेट्रिक उपायों पर पूरी तरह निर्भरता को कम करके आंका जा सकता है। इसके अलावा, एक बच्चे की एंथ्रोपोमेट्रिक स्थिति अंतर-पीढ़ी सहित कई जटिल कारकों का परिणाम हो सकते हैं, जो वर्तमान नीतियों द्वारा अल्पावधि में नहीं बदले जा सकते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, आहार का आंतरिक महत्त्व होता है। इसलिए पोषण के एजेंडे को 'भोजन के अधिकार' के रूप में माना जाना चाहिए।

डेटा पहल की जरूरत

यहाँ ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि भारत में बच्चों या वयस्कों के आहार सेवन और पोषण संबंधी स्थिति पर एक समर्पित राष्ट्रीय स्तर पर सर्वेक्षण नहीं है। NFHS, राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो और राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के पहलुओं का लाभ उठाने और संयोजन करने वाली एक आधुनिक डेटा पहल, जिसमें विभिन्न खाद्य पदार्थों पर विस्तृत घरेलू स्तर के उपभोग और व्यय पर डेटा एकत्र किया जाना चाहिए।

संक्षेप में, बाल आहार के बोझ को कम करने और विशेष रूप से निम्न सामाजिक आर्थिक आबादी समूहों के लिए गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों तक सस्ती (आर्थिक और भौतिक) पहुंच प्रदान करने के लिए एक नीतिगत लक्ष्य को निर्धारित करना होगा। यह बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है क्योंकि भारत भुखमरी की समस्या को खत्म करने और अच्छे स्वास्थ्य एवं कल्याण से संबंधित सतत विकास लक्ष्यों (SDGs 2 और 3) पर पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

5वां राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन ने 5वां राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) जारी किया।
- इसमें भारत के राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की जनसंख्या, स्वास्थ्य और पोषण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है।
- यह सर्वेक्षण का पहल चरण है। दूसरा चरण अगले वर्ष जारी किया जाएगा।
- 17 राज्यों और 5 केंद्रशासित प्रदेशों के परिणाम को पहले चरण में जारी किया गया है।
- विदित हो कि शेष अन्य राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को कवर करने वाले दूसरे चरण को कोविड-19 के कारण स्थगित किया गया था
- चरण-2 को नवंबर से फिर से शुरू किया गया है और मई 2021 तक इसके पूरा होने की उम्मीद है।

सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष

- वर्तमान NFHS 6.1 लाख सैंपल घरों में आयोजित किया गया है, जिसमें जनसंख्या, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और पोषण से संबंधित संकेतकों पर जानकारी एकत्र करने के लिए घरेलू स्तर पर साक्षात्कार लिए गए है।
- सर्वेक्षण में सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 12 से 23 महीने के बच्चों के टीकाकरण कवरेज में काफी सुधार पाया गया है।
- महिला सशक्तिकरण संकेतक (बैंक खाते वाली महिलाओं सहित) में काफी प्रगति हुई है।
- डेटा के एक त्वरित अवलोकन से पता चला है कि आंध्र प्रदेश में, पूरी तरह से टीकाकरण वाले बच्चों (12-23 महीने) का प्रतिशत चौथे संस्करण में 65% से 73% हो गया है।
- NFHS-4 (2015-16) की तुलना में इस बार 15 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में नवजात मृत्यु दर (NMR) कम हुई है।
- NFHS-5 सर्वे के मुताबिक, बिहार, हिमाचल प्रदेश, असम, केरल, मिजोरम, नागालैंड, तेलंगाना, मणिपुर, त्रिपुरा, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और लक्षद्वीप जैसे हिस्सों में पांच साल से कम उम्र के कमजोर बच्चों का प्रतिशत बढ़ गया, जबकि पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में यह प्रतिशत पहले जैसा ही है।

चिंताएं

- महिलाओं में एनीमिया चिंता का एक प्रमुख कारण है। सभी राज्यों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं में एनीमिया बहुत अधिक है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि पहले चरण वाले राज्यों में प्रजनन दर में गिरावट आई है, गर्भनिरोधक उपयोग में वृद्धि हुई है।
- जिसमें आंध्र प्रदेश (98 प्रतिशत), तेलंगाना (93 प्रतिशत), केरल (88 प्रतिशत), कर्नाटक (84 प्रतिशत), बिहार (78 प्रतिशत) और महाराष्ट्र (77 फीसदी) है।

- त्रिपुरा (2015-16 में 33.1 प्रतिशत से 40.1 प्रतिशत), मणिपुर (2015-16 में 13.7 प्रतिशत से 16.3 प्रतिशत) और असम (2015-16 में 30.8 प्रतिशत से 31.8 प्रतिशत) बाल विवाह में वृद्धि हुई है।
- साथ ही पश्चिम बंगाल (41.6 प्रतिशत) और बिहार (40.8 प्रतिशत) जैसे राज्यों में अभी भी बाल विवाह का प्रचलन सबसे अधिक है।
- अधिकांश राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आमतौर पर छिटपुट हिंसा में गिरावट आई है, लेकिन सिक्किम, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, असम और कर्नाटक जैसे पांच राज्यों में यह वृद्धि हुई है।
- कर्नाटक में NFHS-4 में 20.6 फीसदी से लेकर NFHS-5 में 44.6 फीसदी तक, हिंसा में सबसे बड़ी वृद्धि देखी।
- आंकड़ों के अनुसार पांच राज्यों (असम, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मेघालय और पश्चिम बंगाल) में यौन हिंसा बढ़ी है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण क्या है?

- यह स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तत्वाधान में किया जाने वाला सर्वेक्षण है।
- इसके अंतर्गत परिवार व स्वास्थ्य के बारे में घरों और व्यक्तियों से जानकारी एकत्र की जाती है, जो सरकार को स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद प्रदान करता हैं। इस प्रकार यह एक व्यापक परिवार नमूना सर्वेक्षण है।
- यह भारत में विस्तृत स्वास्थ्य आकड़ों का मुख्य स्रोत है।
- पहला राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण वर्ष 1992-93 में हुआ था।
- अंतराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) जो कि मुंबई में स्थित हैं यह इस सर्वेक्षण के लिए केन्द्रीय एजेंसी है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. हाल ही में जारी किए गए 5वें राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. NFHS-4 की तुलना में इस बार 15 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में नवजात मृत्यु दर (NMR) कम हुई है।
2. ऐसा पहली बार हुआ है जब सभी राज्यों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों में एनीमिया बहुत अधिक है।
3. आंकड़ों के अनुसार पांच राज्यों (असम, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मेघालय और पश्चिम बंगाल) में यौन हिंसा बढ़ी है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 2 **(b)** 1 और 2
(c) 2 और 3 **(d)** 1 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements in the context of '5th National Family Health Survey' (NFHS), released recently:-

1. Neonatal Mortality Rate (NMR) has come down in 15 states and UTs as compared to NFHS-4.
2. This is the first time that anemia is more prevalent in men than women in all states.
3. According to the data, sexual violence has increased in five states (Assam, Karnataka, Maharashtra, Meghalaya and West Bengal).

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 2 **(b)** 1 and 2
(c) 2 and 3 **(d)** 1 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. कुपोषण या भुखमरी की समस्या के बहुआयामी कारण हैं। कुपोषण में योगदान करने वाले कारकों पर चर्चा करते हुए भारत में कुपोषण को सुधारने के लिए उपर्युक्त उपायों का सुझाव दें। (250 शब्द)

Q. There are multifaceted causes of malnutrition or starvation problems. While discussing the factors contributing to malnutrition, suggest appropriate measures to improve malnutrition in India. (250 Words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।